१३. क्या सचमुच आजाद हुए हम ?

– कर्नल डॉ. वीरेंद्र प्रताप सिंह

स्वतंत्रता संबंधी विचारों पर अपने मत प्रकट कीजिए :–

आसपास

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● स्वतंत्रता किन-किन क्षेत्रों में आवश्यक है, चर्चा कराएँ । ● क्या असीमित स्वतंत्रता उपयुक्त होगी, प्रश्न पूछें । ● नियंत्रित स्वतंत्रता पर विशेष चर्चा कराएँ ।

जश्न कहीं हो किसी भवन में, डूबी जब बस्ती क्रंदन में
तब आँधी चलती चिंतन में, और प्रश्न उठता है मन में
क्या सचमुच आजाद हुए हम ?

पहले भी दु:ख दर्द कई थे, पर सब कुछ व्यापार नहीं था
संबंधों में अपनापन था, रिश्तों का बाजार नहीं था
खुशबू बसती थी खेतों में, पड़ते थे सावन में झूले
अब कागज के फूल सजा कर, उन मीठे गीतों को भूले
तुलसी की चौपाई जलती, जब उल्टी धुन के ईंधन में
तब आँधी चलती चिंतन में, और प्रश्न उठता है मन में
क्या सचमुच आजाद हुए हम ?

माना अनपढ़ थे बाबूजी, माँ थी उपवासों की मारी
भाई की अपनी मजबूरी, भाभी की अपनी लाचारी
सज्जा के सामान नहीं थे, होड़ नहीं थी दिखलाने की
सब कुछ खोने में खुशियाँ थीं, चाह नहीं ज्यादा पाने की
तब टूटा घर लगता था, अब सूनापन है आँगन में
तब आँधी चलती चिंतन में, और प्रश्न उठता है मन में
क्या सचमुच आजाद हुए हम ?

परिचय

जन्म : २२ सितंबर १९५६ बड़बिल (उड़ीसा)

परिचय : कर्नल साहब राष्ट्रीय स्तर के ख्याति प्राप्त कवि हैं । आपकी रचनाओं में राष्ट्रप्रेम के साथ-साथ सभी वर्गों और संप्रदायों को साथ लेकर चलने और सत्य को ठोंक कर कहने की बात विशेष रूपसे मुखर होती है ।

प्रमुख कृतियाँ : रक्तांजलि, बूँद-बूँद की प्यास (काव्य संग्रह) आदि ।

पद्‍य संबंधी

गीत : स्वर, पद, ताल से युक्त गान ही गीत होता है । इसमें एक मुखड़ा तथा कुछ अंतरे होते हैं । प्रत्येक अंतरे के बाद मुखड़े को दोहराया जाता है । गीत गेय होता है ।

प्रस्तुत गीत के माध्यम से कर्नल साहब ने समाज में फैली विसंगतियों पर कुठाराघात करते हुए हमें वास्तविक आजादी का अर्थ समझाया है ।

आजादी का अर्थ नहीं है केवल सत्ता का परिवर्तन
आजादी का अर्थ नहीं है चंद चुने मोरों का नर्तन ।
आजादी का अर्थ नहीं है सब का उच्छृंखल हो जाना ।
ऊँची कुर्सी के आगे जब न्याय रेंगता अभिनंदन में
तब आँधी चलती चिंतन में और प्रश्न उठता है मन में
क्या सचमुच आजाद हुए हम ?

आजादी है खुली हवा के झोंकों का सबको छू जाना
आजादी है ओस सरीखी नर्म पत्तियों पर चू जाना
आजादी है इंद्रधनुष के रंगों का मिल जुलकर रहना
आजादी है निर्झनी-सा सबके हित की खातिर बहना ।
आजादी जब परिभाषित हो बंधती सत्ता के बंधन में
तब आँधी चलती चिंतन में और प्रश्न उठता है मन में
क्या सचमुच आजाद हुए हम ?

—०—

श्रवणीय

कवि रहीम के नीतिपरक दोहे सुनिए तथा किन्हीं पाँच दोहों का भावार्थ लिखिए ।

पठनीय

किसी भारतीय वैज्ञानिक के बारे में पढ़िए ।

शब्द संसार

क्रंदन (पुं.सं.) = रोना, विलाप
चिंतन (पुं.सं.) = बार-बार होने वाला स्मरण, ध्यान, विचार
निर्झनी-निर्झरिणी (स्त्री.सं.) = नदी, झरना

संभाषणीय

'भारत देश है मेरा'...., इस विषय पर निम्न मुद्दों के आधार पर चर्चा कीजिए :
(१) विस्तार (२) सागर
(३) लोग (४) खान-पान
(५) अनेकता में एकता

कल्पना पल्लवन

'सही स्वतंत्रता उस दिन होगी', इस विषय पर अपने विचार व्यक्त कीजिए ।

लेखनीय

आशारानी वोरा की 'भारत की प्रथम महिलाएँ' पुस्तक पढ़िए तथा उसमें से किन्हीं दों महिलाओं की जानकारी पर आधारित टिप्पणी तैयार कीजिए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(क) संजाल

घरवालों की स्थिति

(ख) आकृति पूर्ण कीजिए :

१.

आजादी में हम

कल

आज

२.

कवि के मतानुसार आजादी का असली मतलब

(२) 'क्या सचमुच आजाद हुए हम' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए ।

पाठ से आगे

आपके आसपास के किसी फौजी से मुलाकात के लिए प्रश्नावली तैयार कीजिए ।

7VJUHP

रचना बोध

....

....

....